Volume-7, No. 1 Feb.-2020, pp. Hin.50-54

दलित किशोर विद्यार्थियों के स्वप्रत्यक्षीकरण, गृह पर्यावरण, तथा कक्षा पर्यावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ किये गये अध्ययन की समीक्षा

श्री समर बहादुर, शोध छात्र
टी.डी.पी.जी. कॉलेज जौनपुर उत्तर–प्रदेश भारत
डॉ. सुधांशु सिन्हा, शोध निर्देशक
एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा विभाग
टी.डी.पी.जी. कॉलेज जौनपुर उत्तर–प्रदेश भारत

सार–
शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है ओर जीवन–पर्यन्त चलती रहती है। शिक्षा बालक के विकास को सुनियोजित दिशा देने में तथा उसकी समस्त शक्तियों के समुचित विकास के स्तर का निर्धारण करने में सहायक होती है। शिक्षा बालक के मूल प्रकृति–जन्य व्यवहार को परिमार्जित करके उसमें धैर्य, सहनशीलता, त्याग, परोपकार एवं अन्य अनेक नैतिक गुणों का विकास करती है। शिक्षा समाज के सभी वर्गो को उत्पादक, उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। व्यक्ति समाज के अन्य व्यक्तियों के बारे में सोचता है। लेकिन उस से अधिक वह अपने बारे में अवश्य सोचता है। जिस प्रकार हम समाज के अन्य सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं और यह प्रत्यक्षीकरण हमारी अन्तर क्रिया को प्रभावित करता है। उसी प्रकार हम स्वयं को उद्दीपक मानकर उसका प्रत्यक्षीकरण करते हैं। जो हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहारों को प्रभावित करता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए चार्ल्स कूले ने अपना मत प्रकट किया है– जिस प्रकार व्यक्ति अपनी प्रतिमा दर्पण में देखता है उसी प्रकार स्वप्रत्यक्षीकरण में स्वयं का वर्णन करता है। अर्थात् व्यक्ति अपने गुणों, विशेषताओं, विचारों एवं संवेगों का मूल्यांकन करता है।

मुख्य शब्द– स्वप्रत्यक्षीकरण, गृह पर्यावरण, शैक्षिक उपलब्धि, कक्षा पर्यावरण

स्वप्रत्यक्षीकरण को मुख्य रूप से पर्यावरण व व्यक्तिगत कारकों द्वारा प्रभावित हुआ माना जाता है। पर्यावरण के विभिन्न अवयवों यथा अभिभावकों की महत्वाकाक्षां, सामाजिक आकांक्षा, सफल व्यक्ति का प्रभाव, संस्कृति, सामाजिक मूल्य, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत स्वप्रत्यक्षीकरण के विभिन्न अवयव यथा इच्छाएं व्यक्तिगत पूर्ण अनुभव, मूल्य व रूचि लिंग सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि व वंश तथा परिवार की पृष्ठभूमि इतने महत्वपूर्ण कारक हैं जो बालक के किसी समस्या पर अभिव्यक्ति देने का साहस कर पाने तथा उसके समाधान के लिए तत्पर होने और अन्ततः सक्षम बना कर कार्यों की सफलता, असफलता में महत्वपूर्ण हो सकते हैं, जो बालक के स्वप्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करते है। इन अवयवों का छात्र के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। जो बालक के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है। सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की दृष्टि से शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि अगर गृह पर्यावरण ही संतुलित नही होगा तो बालक का सर्वांगीण विकास तो सम्भव ही नही है।

गृह पर्यावरण का बालक के सर्वांगीण विकास में कितना योगदान है, अतएव जब एक ही कक्षा में पढ़ने वाले समान आयु और बुद्धिलब्धि स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने को मिले तो विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता को प्रभावित करने वाले दूसरे पर्यावरणीय घटक पर ध्यान अवश्य ही आकृष्ट होता है। वह कारक गृह पर्यावरण हो सकता है। एक सामाजिक प्राणी होने के कारण बालक गृह पर्यावरण के प्रभावों से नही बच सकता है। गृह पर्यावरण असन्तुलित होने से शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ही चरमरा जायेगा।

दलित किशोर विद्यार्थियों को उनके घर परिवार में भी उचित पर्यावरण नही मिल पाता है। यथा आवश्यक साधन सुविधाओं एवं उचित मार्गदर्शन का अभाव तथा उचित खान–पान, परिवार की आर्थिक–सामाजिक स्थितियाँ, स्वस्थ्य माता–पिता की शिक्षा सम्बन्ध आदि जिनके कारण इनकी शिक्षा का स्तर निम्न ही रहता

है। जिससे इस वर्ग के विद्यार्थी सामाजिक आर्थिक धार्मिक राजनीतिक और शैक्षिक दृष्टि से काफी पिछड़ जाते हैं और इनका सामाजीकरण नही हो पाता है। परिणाम स्वरूप दलित किशोर विद्यार्थियों का जीवन स्तर प्रभावित होता है। जिससे ये कुन्ठित और तनावग्रस्त महसूस करते हैं। और इनका शारीरिक एवं मानसिक संतुलन तथा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जिससे अरस्तु की यह परिभाषा भी अपना अस्तित्व खो देती है कि– ''स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का निर्माण होता है।'' परिणाम स्वरूप बालक का स्वप्रत्यक्षीकरण प्रभावित होता है।

गृह पर्यावरण के विभिन्न अवयव यथा परिवार में एकजुटता, अभिव्यक्ति के अवसर, संघर्ष की स्थितियां, परिवार में छात्र स्वीकार्यता, देखभाल, सुरक्षा, दण्ड, अनुरूपता, अलगाव, पुरस्कार, विशेषाधिकार से वंचन, प्रोत्साहन, उपेक्षा एवं अनुमति, परिवार के भीतर उसकी आत्म निर्भरता, परिवार का सक्रिय मनोरंजनात्मक झुकाव, इसका संगठन और छात्र पर परिवार का नियंत्रण इतने महत्वपूर्ण कारक हैं कि जो बालक के निर्णय लेने, तर्क करने, चिन्तन–मनन और विश्लेषण करने तथा किसी समस्या पर अभिव्यक्ति देने का साहस कर पाने तथा उसके समाधान के लिए तत्पर होने और अन्ततः सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इन अवयवों का छात्र की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध होना स्वाभाविक है जो बालक के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है और बालक का स्वप्रत्यक्षीकरण मजबूत और सकारात्मक होता है।

बालक की प्रथम शिक्षा गृह पर्यावरण से शुरू होती है और आगे उसको शिक्षित करने का कार्य विद्यालय में होता है अतः विद्यालय का पर्यावरण बालक के जीवन को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण कारक हो सकता है। कक्षा पर्यावरण से तात्पर्य विद्यालयी या शैक्षिक पर्यावरण से है। वे समस्त वस्तुएं जो बालक की शिक्षा से सम्बन्धित होती हैं। और बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव डालती हैं। उसे हम शैक्षिक पर्यावरण कहते हैं।

कक्षा पर्यावरण के विभिन्न अवयवों यथा विद्यालयी शिक्षण व्यवस्था, परीक्षा पद्धति, विद्यालय के आसपास का परिवेश आदि के साथ–साथ कक्षा में सृजनात्मकता, दण्ड प्रोत्साहन, पुरस्कार, अनुमति, स्वीकृति, अस्वीकृति, नियंत्रण, निर्णय लेने, तर्क करने, अभिव्यक्ति, चिन्तन, मनन और विश्लेषण करने, प्रश्न पूछने और अपनी शैक्षिक समस्या का समाधान प्राप्त करने की अनुमति का समाहित होना है।

कक्षा पर्यावरण का बालक के सर्वांगीण विकास में कितना योगदान है, अतएव जब एक ही कक्षा में पढ़ने वाले समान आयु और समान बुद्धिलब्धि स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने को मिले तो विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता को प्रभावित करने वाले अन्य पर्यावरणीय कारकों पर ध्यान देने की अवश्य ही जरूरत पड़ती हैं। वह कारक कक्षा पर्यावरण हो सकता है। एक सामाजिक प्राणी होने के कारण बालक कक्षा पर्यावरण के प्रभावों से नही बच सकता है। कक्षा पर्यावरण असन्तुलित होने से शिक्षा अपने उद्देश्यों से विमुख हो जायेगी।

दलित किशोर विद्यार्थियों के पास आवश्यक साधन सुविधाओं और उचित मार्गदर्शन का अभाव, शिक्षक की शिक्षण नीति, छात्र शिक्षक सम्बन्ध, कक्षा में इनकी स्वीकार्यता का स्तर, दलित किशोर विद्यार्थियों के नकारात्मक नजरिया, शैक्षिक प्रक्रिया की भेदभाव पूर्ण नीति, दोषपूर्ण मूल्यांकन पद्धति और अभिव्यक्ति की आजादी का स्तर, शैक्षिक समस्याओं का समाधान प्राप्त करने में असमानता, जिनके कारण इनके शिक्षा का स्तर निम्न ही रहता है। जिससे इस वर्ग के विद्यार्थी शैक्षिक तथा सामाजिक रूप से काफी पिछड़ जाते हैं। और इनका सामाजीकरण नही हो पाता है। परिणाम स्वरूप दलित किशोर विद्यार्थियों का जीवन स्तर प्रभावित होता है। जिससे ये कुन्ठित एवं तनाव ग्रस्त रहते हैं। और इनका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ बिगड़ जाता है। परिणाम स्वरूप इनका स्वप्रत्यक्षीकरण प्रभावित होता है।

कक्षा पर्यावरण के विभिन्न अवयव यथा कक्षा–कक्ष में एकजुटता, अभिव्यक्ति के अवसर, संघर्ष की स्थितियाँ, कक्षा–कक्ष में छात्र की स्वीकार्यता, देखभाल, सुरक्षा, दण्ड, अनुरूपता, अलगाव, पुरस्कार, विशेषाधिकार से वन्चन, प्रोत्साहन, उपेक्षा एवं अनुमति, कक्षा–कक्ष के भीतर उसकी आत्मनिभर्रता कक्षा–कक्ष का सक्रिय मनोरंजनात्मक झुकाव, उसका संगठन और छात्र पर शिक्षक का नियंत्रण इतने महत्वपूर्ण कारक हैं जो बालक के निर्णय लेने, तर्क करने, चिन्तन, मनन, और विश्लेषण करने तथा किसी समस्या पर अभिव्यक्ति देने का साहस कर पाने तथा उसके समाधान के लिए तत्पर होने और अन्ततः सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इन अवयवों का छात्र की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। जो बालक के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करके शिक्षा के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होता है और जिसके परिणाम स्वरूप बालक का स्वप्रत्यक्षीकरण मजबूत और सकारात्मक होता है।

तूफान और तनाव मनोवैज्ञानिक जी स्टेनले हाल द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है, जो किशोरावस्था की अवधि को अशांन्ति और कठिनाई के समय के रूप में सन्दर्भित करता है। किशोर अधिक भावनात्मक रूप

से अस्थिर होते हैं। और अधिक बार मिजाज का अनुभव करते हैं। क्योंकि वे यौवन के साथ आने वाले परिवर्तनों से गुजरते हैं। वे अधिक जोखिम भरे व्यवहार में संलग्न होते हैं। जो खुद को और दूसरों को नुकसान पहुचा सकते हैं, सिगरेट, शराब, ड्रग्स के साथ प्रयोग करने से लेकर आपराधिक व्यवहार तक। हालांकि सभी किशोरों को हाल द्वारा वर्णित तूफान और तनाव का अनुभव नही है यह आमतौर पर स्वीकार किया जाता है कि यह किशोरावस्था की अवधि के दौरान जीवन में किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक होने की संभावना है। किशोरावस्था का स्वप्रत्यक्षीकरण से सम्बन्ध होना स्वभाविक है जो बालक का सर्वांगीण विकास करता है।

फ्रीमैन– ''शैक्षिक उपलब्धि वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है"।

थार्नडाइक और हेगन– ''जब हम सम्प्राप्ति परीक्षण को प्रयोग करते हैं तब हम इस बात को निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार कि शिक्षा प्राप्त होने के पश्चात् व्यक्ति ने क्या सीखा है?

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि– शैक्षिक उपलब्धि वे हैं, जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाये जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।'' शैक्षिक उपलब्धि का बालक के स्वप्रत्यक्षीकरण से सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। जो बालक का सर्वांगीण विकास करके उसके जीवन को सार्थक बनाती है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

के रामाकृष्णन (2005) ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालयी अभिप्रेरणा का बुद्धि, आत्म–प्रत्यय, कक्षा–कक्ष वातावरण एवं अभिभावक संलग्नता में सम्बन्ध नामक विषय पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया गया कि– विद्यालयी अभिप्रेरणा का बुद्धि, आत्म प्रत्यय, कक्षा–कक्ष वातावरण, अभिभावक संलग्नता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

सैनी, मोनिका (2010) ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का उनके अध्ययन आदत, पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण की विमा नियंत्रण, सुरक्षा, दण्ड, अनुरूपता, अलगाव, पुरस्कार, विशेषाधिकार से वंचन, प्रोत्साहन उपेक्षा एवं अनुमति का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक एवं असार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। विद्यालयी वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

लमरे, रूबिनिया (2010) ने मेघालय राज्य के पूर्वी खासी हिल राज्य के जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का कुछ मनो–सामाजिक अस्थिरता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप पाया कि– व्यक्तित्व की वीमा परिस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि, सामान्य योग्यता, मानसिक स्वास्थ्य, परिपक्वता, परिवर्तन नैतिकता, स्व–नियंत्रण, संज्ञानात्मक एवं पर्याप्तता का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। सामाजिक–आर्थिक स्तर का अभिभावक की शिक्षा, माता–पिता के व्यवसाय एवं पारिवारिक आय का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया ।

बंसल, आदित्य (2016) ने किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं स्व–प्रत्यय के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि– किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं स्व–प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

गोनी एवं बेलो (2016). ने ब्रोनो स्टेट कॉलेज ऑफ एजूकेशन में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्व–सम्प्रत्यय, लिंग विभिन्नताओं एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– छात्रों के लिंग भिन्नता एवं स्व–सम्प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात स्व–सम्प्रत्यय एवं भिन्न लिंग वाले छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति समान पायी गयी।

डोगरा, रहमतु, अब्दुल्लाही (2015) ने जरिया महानगर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण समर्थन, शैक्षिक आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण समर्थन एवं शैक्षिक आत्म–प्रत्यय के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण समर्थन की विमा अभिभावक समर्थन एवं शिक्षक समर्थन का शैक्षिक आत्म–प्रत्यय के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक वातावरण शैक्षिक आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करता है।

शोध का औचित्य– शोधकर्ता द्वारा यह प्रश्न खोजने का प्रयास किया जायेगा कि क्या दलित वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का कमजोर होना उनके स्वप्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करता है?

क्या स्वप्रत्यक्षीकरण उनकी शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है? क्या उनके गृह पर्यावरण एवं कक्षा पर्यावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध है या नही?

आवश्यकता एवं महत्व– किसी भी चीज की आवश्यकता तब पड़ती है जब उसमें समस्याएँ होती है एवं समस्या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की है । जहाँ वर्तमान समय में उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा में दिन–प्रतिदिन वृद्धि हुई है, वहीं दलित वर्ग के विद्यार्थी भी शिक्षा की तरफ उन्मुख हुए है, लेकिन उनमें आत्म–विश्वास की कमी के कारण उनकी शिक्षा में रूकावट पैदा होना लाजिमी है। जहाँ वर्तमान समय में दलित वर्ग के लोगों की शिक्षा में कुछ प्रतिशत में वृद्धि हुई है, वही उनकी सामाजिक–आर्थिक स्तर, उनकी सोच, उनके प्रति लोगों का व्यवहार उनके शिक्षा में रूकावट का कारण बन रही है। दलित वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक स्तर से कमजोर होना उनके स्व–प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करता है वहीं गृह पर्यावरण में आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कार्यों में अत्यधिक लगे रहने से बच्चों की शिक्षा पर ध्यान न देना, माता–पिता का कम पढ़ा–लिखा होना, बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में अक्षम होना आदि उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। वही दूसरी ओर कक्षा–कक्ष में शिक्षकों को उनके प्रति व्यवहार कुशल न होना, उच्च वर्ग के बच्चों द्वारा उन्हें हीन या कमजोर समझने के साथ जातिवाचक शब्दों से ताना मारना आदि कारणों से उनके आत्म–विश्वास को कमजोर करने के साथ–साथ उनके शैक्षिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करता है। जैसा कि पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर पर कमजोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है। और विद्यालयी अभिप्रेरणा का बुद्धि, आत्म–प्रत्यय, कक्षा–कक्ष वातावरण, अभिवावक संलग्नता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

भारत की आजादी को लगभग 70 साल हो गये है। दलितों के उत्थान के लिए इन सात दशकों मे भारत सरकार की तरफ से कई सरकारी और गैर सरकारी योजनाए लागू की गई हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि क्या इन योजनाओं का दलितों के स्वप्रत्यक्षीकरण, उनके गृह पर्यावरण और कक्षा पर्यावरण पर कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं कि नही? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर को जानने के लिए दलितों के उत्थान के लिए पूर्व में लागू योजनाओं के पूर्नमुल्यांकन की महती आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि शोध कर्ता द्वारा स्वप्रत्यक्षीकरण, गृह–पर्यावरण, कक्षा–पर्यावरण का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को एक साथ दलित विद्यार्थियों को देखने का प्रयास किया गया है। जिससे दलितों के उत्थान हेतु लागू सरकारी और गैर सरकारी योजनाओं का उनके द्वारा किस रूप में और कितनी मात्रा मे उपभोग किया गया है। तथा इससे दलितों को कितना लाभ मिल सकता है।

दलित– शब्द हिन्दू समाज व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर स्थित हजारों वर्षों से अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों का परिचायक है। भारतीय संविधान में इन जातियों को अनुसूचित जाति के नाम से जाना जाता है।

स्वप्रत्यक्षीकरण– एक व्यक्ति जिस ढ़ंग से अपने को देखता है, उसे ही हम उस व्यक्ति का स्वप्रत्यक्षीकरण कहते है। स्वप्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति अपने गुणों, विशेषताओं, विचारों एवं संवेगों का मूल्यांकन करता है। जिस प्रकार हम समाज के अन्य सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं और यह प्रत्यक्षीकरण हमारी अन्तरक्रिया को प्रभावित करता है इसी प्रकार हम स्वयं को उद्दीपक मानकर उसका प्रत्यक्षीकरण करते है। जो हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहारों को प्रभावित करता है

गृह पर्यावरण– गृह पर्यावरण में सम्मिलित होता है। परिवार का वातावरण इसके अन्तर्गत पूरे घर तथा परिवार का वातावरण आता है। इसके अन्तर्गत माता व पिता के आपसी संबंध, माता–पिता, भाई–बहन तथा सभी बच्चों के बीच आपसी संबंध, पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण या प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं आचरण, गृह पर्यावरण कहलाता है। इस लेख में दलित किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण से है। जैसे आर्थिक सामाजिक स्तर पारिवारिक संरचना और विविध पारिवारिक प्रक्रियाओं का प्रयोग करना। प्रस्तुत अध्ययन में गृह पर्यावरण के अन्तर्गत 10 विमाओं का अध्ययन किया जायेगा, जो निम्नांकित है नियंत्रण, सुरक्षा, दण्ड, अनुरूपता, अलगाव, पुरस्कार, विशेषाधिकार से वंचन, प्रोत्साहन, उपेक्षा एवं अनुमति।

कक्षा पर्यावरण– कक्षा पर्यावरण से तात्पर्य विद्यालयी वातावरण से है। वे समस्त वस्तुएं जो बालक की शिक्षा से सम्बन्धित होती है और बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव डालती है, उसे हम शैक्षिक वातावरण कहते है। बालक के कक्षा पर्यावरण में निम्नलिखित कारकों या वस्तुओं को सम्मिलित किया जायेगा–विद्यालयी शिक्षण–व्यवस्था, परीक्षा पद्धति, विद्यालय के आस–पास के परिवेश आदि के

साथ–साथ कक्षा में सृजनात्मकता/प्रोत्साहन, उत्साहवर्धन, अनुमति, स्वीकृत एवं नियंत्रण आदि।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की शिक्षा में प्राप्त उपलब्धि होती है। प्रस्तावित शोध अध्ययन में यू0 पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के इण्टरमीडिएट कक्षा के कला संकाय में अध्ययनरत् दलित किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य सामाजिक अध्ययन विषय में शैक्षिक उपलब्धि से है।

निष्कर्ष– प्राचीन काल में शिक्षा उच्च एवं मध्यम जाति वर्ग के लोगों तक सीमित थी, वही वर्तमान में निम्न जाति वर्ग के लोग भी शिक्षा के महत्व को समझते हुए अपने बच्चों को शिक्षित करने एवं उन्हें भी सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित करने में पीछे नही है। हमारे समाज में दलित वर्ग को अस्पृश्य समझा जाता है। जिसे शिक्षा के माध्यम से ही समाज में फैले जातिवादी एवं अस्पृश्यता को समाप्त किया जा सकता है। सरकारी, गैर सरकारी एवं अन्य माध्यमों से शिक्षा योजना हमारे समाज में उच्च स्तर से लेकर दलित समाज तक शिक्षा पहुँचाने का कार्य कर रही है जिससे एक गरीब या दलित बालक भी शिक्षा ग्रहण कर समाज एवं देश को गौरवान्वित कर सकें। वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर, शिक्षा का माध्यम, विद्यालय का वातावरण व संस्कारों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व स्वप्रत्यक्षीकरण व विचारधारा पर प्रभाव पड़ता है। एक सामान्य विद्यार्थी जहाँ प्रायः स्वयं को सक्षम, योग्य पाता है, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है। वहीं सामाजिक–आर्थिक स्तर से कमजोर दलित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए स्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन मानना अति सहज है। जिसके परिणाम स्वरूप दलित किशोंर विद्यार्थियों का स्व प्रत्यक्षीकरण प्रभावित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. के. रामाकृष्णन्(2005). स्कूलिस्टक मोटिवेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल प्युपिल्स इन रिलेशन टू इंटेलीजेन्स, सेल्फ–कन्सेप्ट, क्लासरूम क्लाइमेट एण्ड पैरेन्टल इन्वॉल्वमेण्ट, पी–एच0डी0 थीसिस एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ कालीकट।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2005), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
3. गोनी एवं बेलो (2016). पैरेन्टल सोशियों– इकोनॉमिक स्टेट्स, सेल्फ–कन्सेप्ट एण्ड जेण्डर डिफरेन्सेस ऑफ स्टूडेन्ट्स, ऐकेडमिक परफॉर्मेन्स इन ब्रोनो स्टेट कॉलेज ऑफ एजूकेशनः इम्पीलिकेशन्स फॉर काउन्सिलिंग, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड प्रैक्टिस (ऑनलाइन). वाल्यूम– 7, नं0 14, 2016।
4. घण्टा, रमेश एवं राव, डी0बी0 (1998), एन्वायरनमेंन्टल प्राब्लम्स एण्ड प्रास्पेक्ट्स, नई दिल्लीः डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।
5. डोगरा, रहमतु अब्दुल्लाही (2015). रिलेशनशिप एमंग सोशल–इन्वामेन्टल सपोर्ट ऐकेडमिक सेल्फ– कन्सेप्ट एण्ड ऐकेडमिक परफार्मेप्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन जरिया मैट्रोपोलिस, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी एण्ड काउन्सिलिंग, फैक्लटी ऑफ एजुकेशन, अहमदु बेल्लु यूनिवर्सिट, जरिया।
6. जायसवाल, सीताराम (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊः प्रशासन केन्द्र।
7. पाण्डेय के0पी0 (2005), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
8. बुच, एम.बी. (1987), थर्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली एन0सी0ई0आर0टी0 ।
9. बंसल, आदित्य (2016). कोरिलेशन बिटाविन फैमिली इनवायरमेण्ट एण्ड सेल्फ स्टीम ऑफ एडवोलसेन्ट्स, द इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम–3,, इश्यू–4, नं0 68, पृ0 129–137।
10. लबरे, रूबिनिया (2010) ए स्टडी ऑफ ऐकेडमी एचीवमेन्ट इन रिलेशन टू सम साइको–सोशल वैरिएबल ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन ईस्ट खासी हिल डिस्ट्रिक, मेघालय, पी.एच–डी. थीसिस, नार्थ–इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग
11. सैनी मोनिका (2010). ए स्टडी ऑफ ऐकेडमी एचीवमेन्ट ऑफ शेड्यूल कास्ट्स सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू स्टडी हैबिट, होम इन्वायर्मेन्ट एण्ड स्कूल इन्वायर्मेन्ट, पी0एच–डी0 थीसिस, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक।